।। गुरू महेमा को अंग ।।
मारवाडी + हिन्दी
(१–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ गुरू महेमा को अंग लिखंते ||

|| कवित ||

नमो नमो गुरू देव || परम निज भेव बताया ||
निर्गुण ग्यान विचार || हंस परम हंस कुवाया ||
नमो नमो गुरू देव || समंद मे डूबत ताऱ्यां ||
नमो नमो गुरू देव || बांहा गहे पार उताऱ्या ||
नमो नमो गुरू देव || ग्यान मोहे निर्भे दीया ||
नमो नमो गुरू देव || तिमर मन का हर लीया ||
जन सुखिया गुरू देव जी || सिष के तारण हार ||
भव सागर मे तारज्यो || लीज्यो बाहे पसार ||१||

गुरुदेव ने भवसागर के परे के परमसुख के देश में याने निजदेश मे पहुँचने का भेद बताया इसलिए गुरुदेव को प्रणाम है,प्रणाम है। निरगुण ज्ञान याने निरगुण पिता के परे के सतगुरु

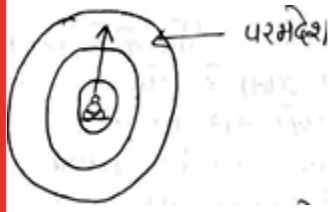

विज्ञान ज्ञान पद मे पहुँचने का भेद बताया जिससे मै हंस से परमहंस बना याने माया मे न आनेवाला वैरागी विज्ञान ज्ञानी बना इसलिए गुरुदेव को प्रणाम है,प्रणाम है। जैसे कोई मनुष्य महासमुद्र मे डुबता है और कोई जानकार मनुष्य उसकी बाह पकड्के डूबने से बचाता है और उस भयंकर महासमुद्र से पार उतारता है,इसीप्रकार मेरे गुरुदेव ने मुझे

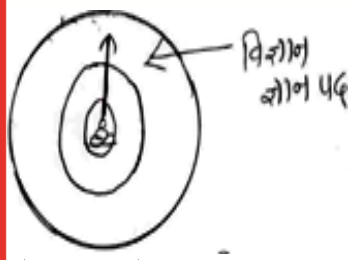

काम,क्रोध,लोभ,मोह,मत्सर तथा शब्द,स्पर्श,रुप,रस,गंध इस विकारी वासनाओं के भवसागर में डूबने से बचाया और ऐसे भवसागर मे डूबने न देते उसकी बाह पकड्कर याने केवल ज्ञान की समज मे रखकर पार उतारा इसलिए गुरुदेव को नमस्कार है,नमस्कार है। मुझे गुरुदेव ने जहाँ काल नही है ऐसे निर्भय देश मे पहुँचने का ज्ञान दिया इसलिए गुरुदेव को नमस्कार है,नमस्कार है । गुरुदेव ने त्रिगुणी माया के भक्ति मे रहूँगा तो माया के पाँच विषयो के सुख मिलेंगे और यह भक्ति त्यागुँगा तो मै इन माया के सुखों से वंचित रहुँगा याने सुखरहीत ऐसा दु:खी रहूँगा और दु:ख में ही पडा रहूँगा यह अज्ञान अंधेरा माया के सुखों के परे के अद्भूत सुखों का ज्ञान देकर मिटाया और ज्ञान से समजाया कि,त्रिगुणी माया मे ही काल है याने त्रिगुणी माया के सुख ही महादु:ख का मूल है और त्रिगुणी माया के सुखों के परे के विज्ञान वैराग्यपद के सुख यही महासुख का भंडार है। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी जगत के ज्ञानी,ध्यानी तथा नर नारी को समजाते है कि,गुरुदेव सभी शिष्यों को बाह पसार के भवसागर से तारनेवाले है । इसलिए गुरुदेव को नमस्कार है,नमस्कार है ।।।१।।

गुरू देवन के देव || सेव कीज्यो सब कोई ||

गुरू जीवां की जहाज ।। गुरां बिन मुक्त न होई ।।
ब्रम्हा विष्णु महेस ।। गुरां कूं सीस निवावे ।।
राम किसन अवतार ।। गुरां सु मोख सिधावे ।।
*** सुखराम दास गुरू देव का ।। कहाँ लग करूं बखाण ।।**
अथंग अथाह अपार हे ।। गुरू दर्याव समान ।।२।।

गुरुदेव यह निरगुण होनकाल ईश्वर के तथा सभी त्रिगुणी माया के देवताओं के याने ब्रम्हा, विष्णु,महादेव शक्ति एवम् अवतार आदी देवताओं के देव है इसलिए सभी ने गुरुदेव की सेवा याने भक्ति करनी चाहिए । जैसे जीवों को भवसागर से पार होने के लिए जहाज होती है वैसे ही भवसागर से मुक्त याने पार होने के लिए गुरु यह जहाज है । इसलिए ब्रम्हा,विष्णू,महादेव जो ३ लोक १४ भवन के सभी छोटे–बडे देवता है वे भी भवतारी गुरु को शीश नमाते है । रामचंद्र तथा कृष्ण ये जगत के सबसे बडे पराक्रमी करामाती अवतार थे । रामचंद्र ने रावण का और कृष्ण ने कंस का संहार किया और जगत को इन भयंकर राक्षसो के जुलूमो से मुक्त किया ऐसे अवतारी रामचंद्र ने वशिष्ठ मुनी को गुरु किया और कृष्ण ने दुर्वासा मुनी को धारण किया और ऐसे दोनो करामाती अवतार गुरु के सत्ता से मोक्ष गए । इसलिए आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर–नारी तथा ज्ञानी,ध्यानीयो को कहते है कि,गुरुदेव की कहाँ लग महीमा करुँ ? जैसे महासमुद्र का पार या थाह लगता नही इसीप्रकार गुरुदेव के भवसागर से पार करा देने के सत्ता का पार या थाह लगता नही । ।।२।।

बिन जळ मिटे न प्यास ।। सीत अंबर बिन सोई ।।
भोजण बिन परसाद ।। भूक जुग जाय न लोई ।।
कंचन कसण सोनार ।। हार तागा बिन राखे ।।
जुग हुन्नर सब काम ।। बात सुंणियां बिन भाखे ।।
सील सांच संतोष ।। ग्यान बिन भ्रम न जावे ।।
जन सुखिया बिन सूर ।। तिवर कहो कूण मिटावे ।।३।।

कडी धूप है और जीव प्यासा है ऐसे जीव की प्यास पानी से ही मिटती पानी छोड्के अन्य कोई वस्तू से नही मिटती इसीप्रकार जीव को मोक्ष गुरुदेव से ही मिलता । अती ठंड है और जीव ठंड से व्याकुल है ऐसे अती ठंड मे जीव की ठंड गरम कपडे ओढने से ही जाती और कोई वस्तू से नही जाती इसीप्रकार जीव को मोक्ष गुरुदेव से ही मिलता । भारी भूख लगी है वह भूख भोजन करने से ही मिटती अन्य कोई वस्तू से मिटती नही इसीप्रकार जीव को मुक्ति गुरुदेव से ही मिलती । सोनार सोने का हार बनाने के लिए सोने को शुध्द करता और हार मे लगनेवाली सभी चीजे बनाता परंतु वह हार धागे में पिरोये बगैर नही बनता इसीप्रकार जीव को मोक्ष गुरुदेव बिना नही मिलता । जगत के सभी हुन्नर या

काम,हुन्नर या काम की कला ज्ञान से समजे बिना जगत मे लोग एक दुजे को बताते है उससे वह हुन्नर या काम किसीको प्राप्त नही होता इसीप्रकार भवतारी गुरु मिले बिना अन्य संतो की वाणी बाच–बाचकर बने हुए गुरु से किसी को मोक्ष नही मिलता । शिष्य ने केवली गुरु का शरणा लेते ही शिष्य मे सहज मे केवल ज्ञान प्रगट होता और साथ मे ही कुद्रती ही सिल,सांच,संतोष ऐसे चौसठ शुभ लक्षण प्रगट होते और जीव के त्रिगुणी माया के कर्मकांडो मे सच्चे,पूर्ण और तृप्त सुख है यह भ्रम कुद्रती ही विनाश होता । जैसे सुरज के उदित हुए बिना रात का घना अंधेरा कोई नही मिटा सकता इसीप्रकार जीव मे केवल ज्ञान उदीत हुए बिना माया के कर्मकांडो से प्राप्त होनेवाले विषयो के सुखों मे ही महासुख है यह भ्रम कोई नही मिटा सकता ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर–नारीयों को समजा रहे है ।।।३।।

सत्तगुरू बिना न मोख ।। भूप बिन पटा न देवे ।।
पातस्याहा बिन हुकम ।। जगत की खबर न लेवे ।।
समंद न ऊतर्‍यो जाय ।। नांव कासट बिन सोई ।।
हीरा रतन से माय ।। भेद मरजीवा होई ।।
पारस बिन बोहो पाहाण ।। लोहो कुं आण लगावे ।।
जन सुखिया सतगुरू बिना ।। जीव कोई मोख न जावे ।।४।।

जैसे जगत में राजा के अलावा जहाँगीरी का पट्टा दुसरा कोई भी नही दे सकता इसीप्रकार सतगुरु बिना कोई भी देवी–देवता,अवतार या इनके साधू संत मोक्ष का पट्टा दे नही सकते । बादशाह के आदेश के बिना संसार की खबर कोई भी अन्य मनुष्य ले नही सकता । जैसे–अकबर बादशाह ने संसार की बालविवाह तथा गुलामी की खबर ली और संसार की बालविवाह तथा गुलामी खतम् की। यह बालविवाह तथा गुलामी बादशाह छोड्कर उसके राज का कोई भी बडे से बडा हुद्देदार नही कर सकता इसीप्रकार सतगुरु सिवा अन्य कोई भी देवी–देवता या देवी–देवता का पद पाए हुए गुरु मोक्ष दे नही सकते । समुद्र पत्थर के नैया से कभी पार नही हो सकता । उसे पार करने के लिए लकडे की नैया चाहिए इसीप्रकार मोक्ष पाने के लिए परमपद का सतगुरु चाहिए । हिरे एवम् रत्न समुद्र में ही है परंतु उसे पाने का भेद मरजीवा याने गोताखोरो के सिवा किसी के पास नही रहता इसीप्रकार मोक्ष पाने की विधी घट मे ही रहती परंतु उसे पाने का भेद सिर्फ सतगुरु के पास रहता अन्य देवी–देवता एवम् अवतारो के पास नही रहता । लोहे को पारस पत्थर ही सोना बना सकता अन्य पत्थर सोना नही बना सकते इसीप्रकार हंस को सतगुरु ही गर्भ मे कभी न आनेवाला परमहंस बना सकता अन्य देवी–देवता या मायावी गुरु नही बना सकते । इसलिए आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी जगत के नर–नारीयो को कह रहे है कि,सतगुरु के बिना कोई भी जीव मोक्ष में नही जा सकता याने

परमहंस नही बन सकता । ।।४।।

गुरू केसो करतार ।। गुरू गत अकथ कहाणी ।।
सिव सनकादिक सेंस ।। बिश्न बोले मुख बाणी ।।
लख चोरासी जूंण ।। जाय भुगतो तम सोई ।।
गुरू निंद्या को पाप ।। तोय ऊतरे नही कोई ।।
*** सिष सतगुरू कू आ कयो ।। गुरा दीनो भेद बताय ।।**
चोरासी सुखराम कहे ।। बांतां सटे गमाय ।।५।।

गुरु ही कर्तार है । गुरु की गती कथने मे नही आती ऐसी अकथ है । शिव,सनकादिक,शेष एवम् विष्णु ये सभी लोग गुरु की महीमा करते है एवम् गुरु की महिमा जैसे के वैसे मुख से कथे नही जाती ऐसा समजते । शिव,सनकादीक,शेष,विष्णु समजते है कि,गुरु निंद्या का पाप ८४ लाख योनी मे पड्कर दु:ख भोगे तो भी नही उतरता । इसका दाखला है कि,शिष्य नारद ने गुरु की निंदा की और उसे विष्णु ने निंदा के पाप भोगने के लिए ८४लाख योनी मे पड्कर जुलूम भोगने की सजा दी । यह सजा नारद ने अपने गुरु कालू भोई को बताई तब गुरु कालू ने शिष्य नारद को ८४ लाख योनी भोगने का भेद बताया और नारद को ८४ लाख योनी भोगने का हुआवा आदेश बातों–बातों मे गुरु ज्ञान के पराक्रम से खतम् करा दिया ऐसी गुरु की अकथ कहानी है मतलब जो पाप भोगने से भी नही मिट सकता था वह पाप गुरु ने सहज मे मिटा दिया । इसीप्रकार ८४लाख योनी मे पड्ने का,आवागमन का चक्कर किसीसे नही मिट सकता वह जीव का चक्कर गुरु के सत्ता से सहज मे मिट जाता ।।।५।।

काळुसा गुरू देव ।। सिष नारद सा कहीये ।।
गुरू बिन मुक्त न होय ।। भेद बिन मोख न लहीये ।।
वाष्ट मुनि पें आय ।। राम बूज्यो तत्त सोई ।।
जीव मोख किम जाय ।। तांहि गत कहीये मोई ।।
*** जन सुखिया बासट कही ।। राम चंद्र सुण कान ।।**
अळा पिंगळा सुखमणा ।। ब्रम्ह मिलण को ओ ध्यान ।।६।।

चारो वेद मे प्रविण ऐसा नारद मुनी शिष्य और मछलियाँ पकड्नेवाले गुरु कालु ऐसे कालु के ज्ञान से नारद ८४लाख योनी के दोष से मुक्त हुआ याने नारद गुरु के ज्ञान से मुक्त हुआ स्वयम् के ज्ञान से मुक्त नही हुआ । इसीप्रकार सतगुरु के परमभेद बिना जीव८४ लाख योनी के दु:ख के चक्कर से मुक्त नही होता । तीन लोक मे पराक्रमी ऐसा विष्णु का अवतार रामचंद्र विष्णु के परे का तत्तज्ञान याने मोक्ष मे जाने का रास्ता गुरु वशिष्ठ मुनी को पुछ्ने गया तब गुरु वशिष्ठ ने रामचंद्र को विधी बताई और कहा की गंगा,यमुना तथा सुखमना का जहाँ मिलन होता उस संगम के रास्ते से जाने से सतस्वरुप ब्रम्ह की

प्राप्ती होती ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।।।६।।

राम किया गुरू देव ।। किसन सरणागत आया ।।
गोरख समरथ जाण ।। गुरां बिन नांय कुवाया ।।
तीन देव को अंस ।। दत्त बोले सत्त बाणी ।।
गुरू धारण चोवीस ।। सुख मेहेमा गुर जाणी ।।
❋ गुर सम जुग मे को नही ।। देव बिसन अवतार ।।
जन सुखिया गुरू देव के ।। सरणे रहो बिचार ।।७।।

अवतार रामचंद्र ने वशिष्ठमुनी को गुरु किया तो अवतार कृष्ण ने गुरु दुर्वासा का शरणा लिया ऐसे ही गोरखनाथ गुरु मछिंद्रनाथ के कारण समर्थ याने अमर होने का अधिकारी बना । इसीप्रकार रामचंद्र,कृष्ण,गोरखनाथ ये सभी गुरु बिना समर्थ याने मोक्ष के अधिकारी नहीं कहलाए। ३ लोक १४ भवन के बडे देव ब्रम्हा,विष्णू,महादेव है ऐसे तीनो बडे देवताओं का अंश दत्तात्रय ने भी मोक्ष पाने के लिए २४ गुरु धारण किए और जगत को भी मोक्ष पाने के लिए गुरु ही चाहिए,देवता नही चलते ऐसा सत्य ज्ञान दिया । सुखदेव बाद्रायणी यह बाल ब्रम्हचारी था। शरण मे आए हुए जीव को सिधा विष्णु के पद मे पहुँचा देने का अधिकारी था परंतु विष्णु के परे मोक्ष मे जाने के लिए मोक्ष का रास्ता जाननेवाला गुरु चाहिए यह गुरु की महीमा जानी और स्वयम का बाल ब्रम्हचारी का भेद भुला तथा गृहस्थी राजा जनक को गुरु किया और मोक्ष पहुँचा। इसलिए आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर नारीयो को समजा रहे कि,मोक्ष पाने के लिए गुरु के समान जुग मे ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति,ये देव, रामचंद्र कृष्ण सरीखे अवतार,दत्तात्रय सरीखा ब्रम्हा,विष्णू महादेव का अंश,सुखदेव समान जती कोई भी नही है इसलिए सभी ने मोक्ष का भेद देनेवाले गुरु का शरणा लेना चाहिए । ।।७।।

सुख देव जती बखाण ।। गुराँ बिन भेद न आयो ।।
जनक बदे गुरू दे भेद ।। तत्त सूं तत्त मिलायो ।।
अेसा सम्रथ जाण ।। आण हम सरणा लीया ।।
जुगन जुगन की गेल ।। पलक मे पेंडा कीया ।।
❋ सतगुरू बीरम दासजी ।। जनक बदे प्रवाण ।।
जन सुखिया अमरिष सा ।। जेदेव दया बखाण ।।८।।

सुखदेव बाद्रायणी यह यती था । इसको सतस्वरुप तत्त में मिलना था परंतु इसे जब तक गुरु नही मिला तब तक सतस्वरुप तत्त का भेद नही मिला । जब इसे जनक राजा गुरु मिला तब सतस्वरुप तत्त का भेद मिला और राजा जनक गुरु के भेद से शिष्य जती सुखदेव बाद्रायणी सतस्वरुप तत्त मे मिला याने मोक्ष में मिला । ऐसे गुरु शिष्य को सतस्वरुप तत्त मे मिला देने के लिए समर्थ है,यह जब मैने गुरु ज्ञान से जाना तब मैने गुरु

बिरमदासजी का शरण लिया और युगोनयुग का चलकर भी न पार करने जैसा लंबा रास्ता गुरुकृपा से बिना कष्ट से पलभर मे पार किया । जनक विदेही गुरु ने जती सुखदेव को सतस्वरुप तत्त से पल मे मिला दिया ऐसा संसार मे रहकर भी जती के जती याने वैराग्य विज्ञानी जनक राजा थे ऐसे ही मेरे सतगुरु बिरमदासजी महाराज जनक राजासरीखे है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की, अधिक मेरे गुरु बिरमदासजी दया मे अमरीष राजा समान है । जिस दुर्वासा ने अमरीष पर अमरीष को मारने के लिए कृत्या राक्षसी प्रगट की उसी पर दया करके सहायता करनेवाले है अमरीष राजा की कथा इसप्रकार है–

अमरीष राजा यह निज साधू था और दुर्वासा ऋषी ने अमरीष राजा पर कोप करके अपने बालों की लट से अमरीष को मारने के लिए कृत्या राक्षसी उत्पन्न की और उन्हें शाप दिया । वह कृत्या तलवार लेकर अमरीष राजा की ओर बढी तब उस कृत्या के पिछे सुदर्शन चक्र लग गया और सुदर्शन चक्र ने उसे जलाकर भस्म कर दिया । वह सुदर्शन चक्र तेजी से दुर्वासा ऋषी के पिछे लग गया ऐसा दुर्वासा ऋषी ने दिया हुआ शाप दुर्वासा के पिछे एक का हजार होकर उन्ही पर उलटा । उस शाप का तपन मिटाने के लिए दुर्वासा स्वर्ग,मृत्यु,पाताल इन तीनो लोको में फिरा । जहाँ भी जाकर शरणा लेने की बिनती की वहाँ के लोग उसकी मजाक करके हँसे परंतु सहायता किसी ने नहीं की । दुर्वासा महादेव का अवतार है उस महादेव ने दुर्वासा को कहा,तुम्हारी सहायता यहाँ नही होगी क्योंकी, तुमने निजसंत का द्रोह किया है। यह द्रोह का गुन्हा मुझसे नेकमात्र भी कम नही हो सकता इसलिए तुम विष्णु के पास जाकर कोशिश करो फिर दुर्वासा विष्णु के पास जाकर सहायता करने के लिए करुणा भाकने लगे। इस सुदर्शन चक्र के आग के तपन से मेरा तन जल रहा है। मै इस तपन को सह नही पा रहा हूँ इसलिए मैं तुम्हारे शरण आया हूँ । तब विष्णु कहने लगे,मैं कहता हुँ वह सत्य सुनो। साधू के वचन मुझसे पलटाये नहीं जाते । इसलिए तुम अमरीष राजा की शरण लो वहीं तुम्हारी सहायता होंगी । वहाँ तुम्हे चैन(शांती)मिलेगी । सभी कोशिश विफल होनेके बाद दुर्वासा रामस्नेही संत अमरीष राजा के चरण में पडा । संत की शरण लेते ही दुर्वासा के पिछे सुरज के समान लगी हुई आग चंदन के समान शांत हो गई और जयदेव के जिस चोर ने हाथ और पैर तोडे थे उस चोर को राजा के दंड से मुक्त करवाया और उसने चोरी किया हुआ धन उसीको वापिस दिलवाया और राजा से उसका सन्मान करवाया ऐसे मेरे गुरु बिरमदासजी दयालू है । ।।८।।

सतगुरू सता समाध ।। जाय ब्रम्हंड घर कीया ।।
प्रमारथ के काज ।। देह जुग बांसा लीया ।।
बड भागी सो जीव ।। सरण सतगुरू की आवे ।।

काग पलट हंस होय ।। कीट सो भ्रंग कहावे ।।
*** जन सुखिया गुरू देव की ।। महेमा कही न जाय ।।**
आप सरीसा कर लिया ।। सिख कूं चरण लगाय ।।९।।

मेरे सतगुरु बिरमदासजी सतगुरु सत्ता से समाधी देश में पहुँचे है। उन्होंने ब्रम्हंड में याने दसवेद्वार में घर किया है । वे मायावी जगत से निकल गए है । पूर्ण विज्ञानी वैरागी बन गए है फिर भी परमार्थ के लिए याने जीवों को काल से मुक्त करने के लिए जगत के लोगो समान देहरुप मे बस्ती करके जगत मे रहते है । कोई भाग्यवान जीव होगा वही सतगुरु बिरमदासजी के शरण मे आएगा या बिरमदासजी समान सतगुरु के शरण में आएगा । उस जीव का कौएस्वरुपी स्वभाव बदलकर हंसस्वरुपी स्वभाव बनेगा । जैसे कौआ पंछी यह मोती देने पे मोती नही खाता वह मरे हुए,सडे हुए प्राणीयों का मांस खाता परंतु हंस पंछी कभी भी मरे हुए,सडे हुए प्राणी का मांस नही खाता । मोती उपज होनेवाले सरोवर पे रहकर मोती खाता । इसीतरह जीव विषय विकारो के सुखों मे लिन रहता परंतु सतगुरु शरण लेने पे विषय विकारो के सुख त्यागता और विज्ञान वैराग्य के महासुख लेता । ऐसा विकारी जीव स्वभाव त्यागकर संत स्वभाव का बनता । कीट याने इल्ली भृंग के शरण मे जाने से किट का भृंग याने भँवरा बन जाता । कीट यह जमीन या पेड पे पेट भरने के लिए दु:ख भोगते जीवन बितानेवाला प्राणी रहता । ऐसा यह दु:खी कीट भृंग के शरण मे आने से भँवरे के समान भँवरा बन जाता । वह कीट से बना हुआ भँवरा बनने पे अच्छे अच्छे फुलो पे मंडराता और अच्छे अच्छे फुलो का रस पिता ऐसा सुखी बन जाता। इसीप्रकार काल कर्मो के दु:खों में पडा हुआ जीव सतगुरु के शरण मे जाने से विज्ञान ज्ञान रस पिनेवाला महासुखी बन जाता । इसलिए आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर–नारीयो को कहते है,जैसा भँवरा शरण आए हुए कीट को अपने सरीखा भँवरा बना देता । **किट याने लट का भँवरा कैसे बनता?**

वर्षाऋतु के साधारण अंतिम दिनो मे पेड–पौधों पे लटे जन्मती । इसमे हरे रंग की लट रहती । यह हरे रंग की लट तीन स्वभाव की रहती । इसीसमय भँवरा भी फुलो मे के रस पिने के लिए पेड–पौधों पे रमता और रमते समय गुंजार करते रहता । यह गुंजार हरे रंग की लटे सुनती । उन हरी लटो में से एक हरी लट गुंजार सुनते ही उलटी पड जाती । दुजी हरी लट गोल गोल सिकुड जाती और तिसरी हरी लट ऐसे रहती की वह भँवरे की गुंजार सुनते ही सिधी खडी हो जाती और गुंजार ध्वनी के ओर भारी हलचल करने लगती। उस लट को भँवरा मुख मे पकडकर अपने मिट्टी के घर मे ले जाता और उस लट को भँवरा अपने मिट्टी के घर मे इक्कीस दिनतक भौ भौ का गुंजार सुनाता जिससे सदा के लिए यह लट भँवरा बन जाती और जैसे भँवरा बाग बगीचे मे अलग अलग पेड पौधों पे जाकर फुलों का सुगंध और रस पिने का आनंद लेता वैसे ही यह लट भँवरा बनने पे

फुलों के सुगंध का और रस पिने का आनंद लेती । यह लट अन्य जमीन पे रेंगनेवाले लटो से हमेशा के लिए न्यारी बन जाती। कल तक पैरो मे कुचले जानेवाली जो लट थी वह भँवरो के संगत मे आकर फुलों के सुगंध का और रस पिने का आनंद लेती । ऐसे ही सतगुरु शरण मे आए हुए शिष्य को अपने चरणो में लेकर महासुख के परमपद का बासी बना देते । इसलिए आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है, ऐसे सतगुरु की महीमा मुख से कथी नही जाती ।।।९।।

गुरू सिष का दातार ।। मोय अेसा धन दिया ।।
ग्यान ध्यान बमेक ।। बुध दे निर्मळ कीया ।।
वायक वचन बिचार ।। हाल गुरू चाल सिखाई ।।
दीन गरीबी प्रेम ।। भाव सो दया पठाई ।।
अकल अरथ सन्मान ।। सबद बाणी सिर गाजे ।।
जन सुखिया गुरू देव ।। सिष पर ईसा निवाजे ।।१०।।

गुरु शिष्य के लिए दाता है । उन्होंने मुझे अद्‌भूत धन दिया। उन्होंने मुझे विज्ञान ज्ञान धन दिया। सतस्वरुप का ध्यान धन दिया । माया क्या है,होनकाल क्या है,सतस्वरुप क्या है? यह समजने का विवेक धन प्रगट करा दिया । विषय विकारो की कुबुध्दी मिटा कर निर्मल बुध्दी प्रगट करा दी। जगत के विषय विकार की एवम् काम,क्रोध,मोह,मत्सर,अहंकार स्वभाव के वाक्य वचन बोलने की तथा विचार करने की विधी खतम् करा दी और संत स्वभाव के तोलमोल वाक्य वचन बोलने की तथा विचार करने की विधी कुद्रती प्रगट करा दी। संत स्वभाव से जिने की चाल सिखाई। घट में दीन,गरीबी,प्रेम,भाव तथा दया प्रगट करा दी । जीवों के प्रती घट मे मगरुरी,द्वेषभाव तथा क्रुरता थी वह मिटा दी और सभी जीवों के प्रती दीन ,गरीबी,प्रेम,भाव तथा दया प्रगट करा दी । कौआ अक्कल नष्ट करके हंस अक्कल दी याने माया क्या है,काल क्या है और सतस्वरुप क्या है? यह समजने की अक्कल दी । ऐसे अनेक प्रकार के अद्‌भूत धन देकर तीन लोक के सभी देवी-देवता दर्शन तथा प्रणाम करना चाहते ऐसा तीन लोक मे मान बढा दिया । इसीप्रकार सतगुरु का सतशब्द मेरे उपर अनंत अद्‌भूत धन देने के लिए गरजते रहता याने उत्साहित रहता । जैसे जगत मे गरीब निवाज याने गरीबो को दु:ख से निकालकर सुख देनेवाला मनुष्य रहता वैसे ही सतगुरु शिष्य को काल के दु:ख से मुक्त कराकर सतस्वरुप के महासुख में भेजनेवाला शिष्य निवाज रहता ऐसे आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर-नारीयों को कहते है ।।।१०।।

भगत भाव भगवान ।। तत्त गुरू मांहि लखाया ।।
खंड ब्रेहेमंड का भेद ।। सोज गुरू सरणे आया ।।
मत्त चित्त समता साच ।। सरण अेसी बिध पाई ।।

सकळ अंग सिर पांव ।। भक्त गुरू देव पठाई ।।
अेसो कर उपगार ।। सिष कूं प्रगट कीयो ।।
जन सुखिया गुरू देव ।। राज नव खंड सिर दीयो ।।११।।

गुरुदेव ने मुझे केवली भक्ति दी । उससे मेरे घट मे भगवान याने सतस्वरुप तत्त प्रगट हुआ और घट मे कुद्रती ही भगवान से मुझे भाव प्रगट हुआ । गुरु के शरण मे आने से पिंड ही खंड–ब्रम्हंड बन गया और घट मे ही खंड–ब्रम्हड को खोजने पे घट मे ही सतस्वरुप भगवान प्रगट मिल गया । गुरु के शरण मे आने से विज्ञान वैराग्य मत,विज्ञान वैराग्य चित,जगत के सभी जीव समान है और परमात्मा के हंस है यह समज तथा भगवान के प्रती न टूटनेवाला विश्वास कुद्रती ही प्रगट हो गया। गुरुदेव ने केवली भक्ती देकर सभी चौसठ के चौसठ विज्ञान वैरागी स्वभाव सिर से पैर तक याने रोम रोम मे प्रगट करा दिए । ऐसे अनेक अद्भूत विज्ञान वैराग्य चरीत्र प्रगट करा देने के उपकार गुरुदेव ने मुझ पे किए । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर–नारीसे कहते है कि,गुरुदेव ने मुझे नौ खंड याने तीन लोक १४ भवन के उपर का सतस्वरुप राज सदा के लिए बक्षिस मे दिया । ऐसे मेरे गुरुदेव उपकारी है । ।।११।।

सतगुर बड दातार ।। तांय जोडे नही कोई ।।
परसण होय गुर देव ।। दत्त बगसे नित्त सोई ।।
धन देवे अण तोल ।। मोल सो तोल न आवे ।।
दु:ख दालद सब जाय ।। खात छेडो नही पावे ।।
❋ अमर लोक साँसण दियो ।। रिध सिध दे बोहो लार ।।
जन सुखिया गुरू देवजी ।। अेसा बड दातार ।।१२।।

सतगुरु बडे दानी है । सतगुरु के समान जोडे मे दानशील तीन लोक चौदह भवन मे कोई नहीं है । गुरु प्रसन्न होने पे सभी प्रकार के धन याने संसार के सुख से लेकर सतस्वरुपतक के सुख नित्य इनाम मे देते है । सतगुरुजी जो धन देते है उस धन का तोलमोल ३लोक १४ भवन के कोई भी वस्तू से नही होता । गुरु के दिए हुए धन से दु:ख और दरिद्रता सभी मिट जाती और उस धन का खाते खाते और खर्च करते करते अंत कभी नही आता । जैसे राजा विरता के बदले विरपुरुष को जहाँगिरी देता वैसा सतगुरु ने मुझे अमरलोक की जहाँगिरी दी और उसके पिछे त्रिगुणी माया की नाश होनेवाली रिध्दी–सिध्दीयों के परे की विनाश न होनेवाली अमरलोक की अनेक प्रकार की रिध्दी–सिध्दीयाँ इनाम मे दी । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी जगत को कहते है कि,ऐसे मेरे गुरुदेव बडे दानी है । ।।१२।।

चमक चोक मणि लाय ।। खाल लोहा सब गाळया ।।
सोगी सोनो सोज ।। फूस नाऱ्या पर जाळया ।।

नाड पकड गहे हात || दरद अपना मन लीया ||
ओषध मूळी बाँट || आण रोगी मुख दीया ||
कसर कोर गुरू सोझ || रोग की जडा कटाई ||
जन सुखिया गुरू देव || बेद पर बेदज भाई ||१३||

जैसे लुहार मिट्टी में पडे हुए लोहे को चुंबक से इकठ्ठा करता है और चमडे को भाँते से अग्नी में गलाकर शुध्द लोहा बनाता है तथा सोनार कचरे मे पडे हुए सोने में सुहागा डाल के गलाता है और अन्य सभी कचरे को जला देता है और कचरे मे के सोने को अच्छा सोना बना लेता है । इसीप्रकार गुरु मन और शब्द,स्पर्श,रुप,रस,गंध,इन विकारो मे लंपट हुयेवे जीव को इन विकारो मे से निकालकर असली वैराग्य विज्ञानी संत बनाता है । जैसे वैद्य रोगी की नाडी हाथ मे पकड्कर कोई कसर कोर न रखते रोगी का दर्द अपने मन मे समज लेता है और जडी-बुटीयो की औषध पिसकर तथा प्रमाण से मिलाकर रोगी को खाने के लिए देता है और रोगी के रोग को जड्सहीत खतम् कर देता है । इसीप्रकार गुरुदेव शिष्य का सभी स्वभाव,स्थिती, कर्म,धर्म ध्यान मे लेकर शिष्य को ज्ञान और भक्ति की विधी देते है । वे शिष्य को सदा के लिए आवागमन के रोग से मुक्त करा देते है । इसलिए गुरुदेव वैद्यो के भी उपर के वैद्य है ऐसे आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर-नारीयो को कहते है । ||१३||

इम्रत सायर सीप || माँय कण मोती लहिये ||
गंगा जमना मध || ओर तिरथ सब कहिये ||
धात बस्त सब होय || जोय सारी गेहे लावे ||
इंद्र लोक अस्थान || ताय सिर बिध बणावे ||
*** अेता सब अर्पण करे || सुर नर सुख समोय ||**
जन सुखिया गुरू देव सूं || सिष ऊरण नही होय ||१४||

सभी अमृत,समुद्र के सभी मोतीयों के सीप याने सभी मोती तथा समुद्र के सभी हिरे,गंगा, यमुना के सभी तिर्थो के(सुख के फल)जगत की सभी धातू की वस्तूएँ,इन्द्र लोक के सभी सुख,इंद्र लोक के उपर के विधी विधी के सभी लोक के सुख,जगत के सभी मनुष्यों के सुख,सभी देवताओं के सुख गुरुदेव को अर्पण किए तो भी शिष्य पे गुरु ने किए हुए सतस्वरुप के सुख के ऋण याने उपकार फिटे नही जाते ऐसे आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जगत के नर-नारी को समजा रहे है ।||१४||

बन मे चंदन रूख || बाग मे गुल्ल बिराजे ||
अष्ट धात में हेम || रतन मे हीरा छाजे ||
ज्यू गोप्याँ मे कान || सभापत इंदर कहीये ||
नदियाँ मे ज्यूँ गंग || धाम मे पोकर लहिये ||

सती नगर मध माँय ।। रेण तारा ससि छाजे ।।
जन सुखिया गुर बिरम ।। सभा मे ईसा बिराजे ।।१५।।

बन के सभी पेडों में चंदन का पेड,बगीचे मे सभी फूलों मे गुलाब का फूल,आठ प्रकार के धातूओं मे सोना,सभी रतनो मे हिरा,गोपीयो मे कृष्ण,देवता के सभा में देव इंद्र,नदियों में गंगा, चारो धामों मे पुष्कर धाम,शहर के सभी नर–नारीयों में सती पुरुष,रात को सभी तारों मे चाँद जैसे शोभता इसीप्रकार मेरे बिरमदासजी गुरु जगत के सभी नर–नारीयों मे तथा ज्ञानी, ध्यानी,दर्शनीयों मे शोभते ऐसे आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी को कहते । ।।१५।।

गुर दीरघ द्रग पाळ ।। मत्त सुखदेव बखाणो ।।
पृथु प्राक्रम मांय ।। ध्यान ध्रु ज्यूं थिर जाणो ।।
समता साम समान ।। प्रेम में पदम सरिसा ।।
दाता करण सधीर ।। ग्यान ऊजियागर ईसा ।।
गेहेरा बहोत गंभीर ।। ब्रम्ह ज्यूं थाह न आवे ।।
जन सुखिया गुर देव ।। तांहि गत बिळा पावे ।।१६।।

मेरे गुरु बिरमदासजी द्रगपाल के समान दिर्घ है याने बडे बलवान है । द्रिगपाल याने पृथ्वी के निचे शेष,शेष के निचे कछुवा,उस कछुवे को रोकने के लिए दस हाथी है उसे द्रिगपाल कहते है । मेरे गुरुदेवजी मत मे सुखदेव के समान है। मेरे गुरुदेवजी पराक्रम के पृथ्वीराज के समान है। मेरे गुरुदेवजी ध्यान मे ध्रुव के समान अटल,समता मे विष्णू के समान,प्रेम मे पदम समान है । मेरे गुरुदेवजी दाता मे और धैर्य मे कर्ण समान ज्ञान मे(येशु ख्रिस्त या महेश)के समान उजीयागर याने चतुर है । सतस्वरुप ब्रम्ह के गहराई का जैसे थाह नही आता ऐसे मेरे गुरु बहोत गहरे है और गंभीर है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर,नारीसे कहते है,ऐसे मेरे गुरु की अनोखी गती है । वह गती एखाद ही हंस समज सकता ।।।१६।।

रूषमांगज, अमरिष ।। सेन गोतम रिष जाणो ।।
बासट, संकर, सेंस ।। कपल सी सोज बखाणो ।।
बालमिक सी बुध ।। चित्त परिक्षीत सो कहिये ।।
अगस्त रूम रिख जाण ।। ताहि गुर सम्रथ लहिये ।।
*** बीर विक्रमा सारसा ।। पर ऊपगारी प्राण ।।**
सत्तगुर बीरम दासजी ।। सुखिया हे तम जाण ।।१७।।

मेरे गुरु बिरमदासजी महाराज राजा रुखमानंद तथा राजा अमरीष समान है । छाप मे गौतम ऋषी समान है । मेरे गुरु वशिष्ठ मुनी समान है । मेरे गुरु आदि शंकराचार्य के समान ज्ञानी है । जिसने होनकाल पारब्रम्ह यह माया है यह विज्ञान वैराग्य नही है ऐसा

बताया । मेरे गुरु समज में कपिल समान है । मेरे गुरु बल मे शेषनाग के समान है । मेरे गुरु बुध्दि मे वाल्मिक के समान है । मेरे गुरु चित्त मे परीक्षित समान है । मेरे गुरु तीन घूँट मे समुद्र पिनेवाले अगस्त ऋषी समान है । मेरे गुरु लोमस ऋषी समान है । ऐसे मेरे गुरु समज मे,बुध्दी में,ज्ञान मे,बल में,चित मे सभी अंग मे समर्थ है याने इन सबसे अधिक है । मेरे गुरु बिरमदासजी महाराज राजा विक्रम के समान तथा राजा हातम के समान वीर और पर उपकारी है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी ज्ञानी,ध्यानी,नर नारी को कह रहे है ।।।१७।।

पाडाँ मंझ सुमेर ।। पंख मे गुरड कहीजे ।।
नरन मे ज्यूं भूप ।। फोज मे गेवर लहीजे ।।
देही मे ज्यूँ नाक ।। देव मझ अन्न बखाणो ।।
भोजन में पकवान ।। मेहल मे दीपग जाणो ।।
*** कस्यप सुत जो ऊगीयाँ ।। मंड उजाळा होय ।।**
यूं सभा मे सुखराम के ।। सतगुर बीरम जोय ।।१८।।

पर्वतो मे सुमेर पर्वत न्यारा है,पंछीयों मे गरुड पंछी अनोखा है,प्रजा मे राजा अनोखा है,फौज मे हाथी सभी प्राणीयों से न्यारा है,देही मे सभी अंगो से नाक न्यारा है,सभी देवता मे अन्न देव न्यारा है,भोजन में मिठाई सभी पदार्थो से अनोखी है,रात के अंधेरे मे महल मे दिपक न्यारा और अनोखा है ऐसे मेरे गुरु जगत मे सभी नर,नारी,ज्ञानी,ध्यानी,दर्शनी,साधू,संत,देवी देवताओं के सभा में न्यारे और अनोखे है । जैसे सुरज उदित न होने के कारण रात मे सभी ओर अंधेरा रहता और सुरज उगते ही पुरे सृष्टी मे प्रकाश होता इसीप्रकार मेरे गुरु से विज्ञान ज्ञान सुनते ही जगत के नर–नारी तथा ज्ञानीयों का माया मोह तथा भ्रम का विनाश होता और सभी मे विज्ञान ज्ञान का प्रकाश होता ऐसे आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी को अपने गुरु बिरमदासजी महाराज के बारे मे कह रहे है ।।।१८।।

गुर ज्यूँ ब्रम्ह सरूप ।। ताय में फेर न कोई ।।
सता समाधी प्राण ।। बेण ब्रम्हा सा होई ।।
सीतळ बिसन समान ।। साच पंडव सुत जाणो ।।
कला किसन कबीर ।। ग्यान गोरख बखाणो ।।
*** जन सुखिया गुर देवजी ।। मेरे इनन समान ।।**
बिरम दास गुर ऊपरे ।। वारूँ बेद कुराण ।।१९।।

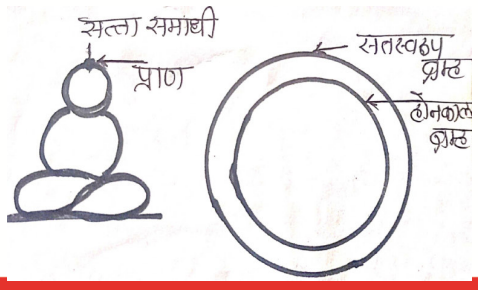

मेरे गुरु सतस्वरुप याने ब्रम्हस्वरुप है । इसमे कोई अंतर याने कम जादा नही है । मेरे गुरु का प्राण सता समाधी देश में है । मेरे गुरु के बचन सतस्वरुप ब्रम्ह के है । मेरे

गुरु विष्णू के समान शितल है । भृगु ऋषी ने विष्णू की छाती पर लाथ मारी तो भी विष्णु ने भृगु पर क्रोध न करते हुए भृगु का पैर सहलाया और बोले की,तुम्हारे पैर को चोट तो नही लगी । सत्य बोलने मे मेरे गुरु पांड्व पुत्र युधिष्ठिर के समान है । मेरे गुरु कला मे चौदा कलाधारी कृष्ण तथा पूर्ण कलाधारी कबीर समान है । मेरे गुरु ज्ञान मे गोरखनाथ के समान है । इसप्रकार मेरे गुरु सभी अंगो मे समर्थ है । ऐसे मेरे गुरु के उपर मैने अभी तक प्राप्त किए हुए वेद और कुराण के सभी ज्ञान, ध्यान,कर्मकांड,करणीयाँ न्योछावर करता हूँ और मेरे गुरु की समर्थाई देखकर वेद,कुराण की सभी विधीयाँ,सभी ज्ञान सदा के लिए त्याग देता हूँ । ।।१९।।

तारण तिरण गुरू देव ।। भेव भव सागर दीया ।।
बिन खेवट बिन नाँव ।। बाहा गेह बाहर लीया ।।
चिदानंद महाराज ।। ब्रम्ह पुरण गुर देवा ।।
धिन्न धिन्न तुम अवतार ।। धिन्न दरसण ले भेवा ।।
बंधी छोड गुर देव ।। दया सागर गुण दाता ।।
जन सुखिया गुर देव ।। ब्रम्ह ज्यूँ बण्या बिधाता ।।२०।।

मेरे गुरु जीवों को तारणेवाले है । भवसागर से तिरने की विधी सिखानेवाले है । मेरे गुरु केवट और नाव के आधार बिना बाह पकड्कर शिष्य को भवसागर से बाहर निकालते है । मेरे गुरु चिदानंद महाराज है ।(चिदानंद महाराज याने तीन ब्रम्ह मे के चिदानंद ब्रम्ह नहीं,तीन ब्रम्ह के परे के आनंदपद है)मेरे गुरु पूर्ण ब्रम्ह है । जीव तारने के लिए आया हुआ ऐसा मेरे गुरु का अवतार धन्य है,धन्य है । मेरे गुरु का जो भी जीव दर्शन लेता है तथा भवसागर से तिरने का भेद लेता है वह जीव धन्य है । मेरे गुरु जीव को काल के बंदीगृह(जेल)से छुडानेवाले दया के सागर है । मेरे गुरु मे सतस्वरुप के सभी गुण है तथा मेरे गुरु सतस्वरुप के समान दाता है । मेरे गुरु जैसे सतस्वरुप ब्रम्ह विधाता है याने जीव को जो लिख दिया वैसा होता है उसमे किसीसे बदल नही होता है इसीप्रकार विधाता है याने मेरे गुरु ने जीव को लिख दिया मोक्ष का पट्टा ३ लोक १४ भवन मे कोई नही बदल सकता ऐसे मेरे गुरु सतस्वरुप के समान विधाता है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी को कह रहे है ।।।२०।।

गुर समरथ सिष जाण ।। निरंजन आद गुसाँई ।।
पार ब्रम्ह गुरू देव ।। फेर सिर्जण सो सांई ।।
जोत सरूपी आप ।। रिजक पूरण गुर देवा ।।
घड भंजण कर्तार ।। अलख अबनासी सेवा ।।
*** जन सुखिया गुर देवजी ।। हरसूं ईधक बताय ।।**
प्राण पुर्ष से ईधक हे ।। बोलत हे घट मांय ।।२१।।

गुरु ही निरंजन है,आद गुसाई है,पारब्रम्ह है,सिरजनहार है,साई है,सत ज्योतस्वरुपी है,रिजक पुरानेवाले है,घडभंजन कर्तार है,अलख है,अविनाशी है ऐसा शिष्यो ने गुरु को समर्थ जानके गुरु की भक्ति करनी चाहिए। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कह रहे कि,गुरुदेवजी यह हर से भी अधिक है तथा घट मे बोलनेवाले प्राण पुरुष से भी अधिक है ऐसा ज्ञान से समजना चाहिए । ।।२१।।

गुर सरणे गोविंद || मिलन की किमत आवे ||
ईदंर मेहे बरसाय || जमीपर साख निपावे ||
प्रदेशी परभोम || गेल बूजे घर आवे ||
चले आपणे पांव || धिन्न सो पंथ बतावे ||
*** जन सुखिया फल नीर रे || पीवत तर्वर मांय ||**
सम्रथ साहेब पावीया || सत्तगुर सरणे आय ।।२२।।

गुरु के शरण मे जाने से ही गोविंद प्राप्ती की हिकमत मालूम पडती है । जैसे इंद्र पानी की वर्षा करके जमीनपर खेती की उपज करता है वैसे गुरु शिष्य मे विज्ञान ज्ञान प्रगटकर शिष्य को विज्ञान ज्ञानी बनाता है । परदेशी अपने देश से अनजाने मुलूक मे जिसके घर जाना है उसके घर का रास्ता पुछ्ते पुछ्ते जाता है । वह परदेशी अनजाने नगर के घर पहुँचने के लिए अपने पैरो से चलते रहता है परंतु उसे घर नही मिलता है । जब घर का रास्ता बतानेवाला मिलता है तबही वह घर पे पहुँचता तबतक इधर–उधर भटकके थकते रहता है । अगर उसे रास्ता बतानेवाला मिला नही होता तो वह घर पे पहुँचता ही नही था,थक के कही बैठे रहता था । रास्ता बतानेवाले ने रास्ता बताया इसलिए परभौम से आया हुआ परदेसी घर पहुँचा इसीकारण परदेसी के लिए घर का रास्ता बतानेवाला धन्य है । इसीप्रकार बिना गुरुदेव के मिलने और बिना रास्ता बताए प्राण आनंदपद के घर नही पहुँचता है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,जैसे फल पेड से पानी पिकर परीपक्व होता है इसीप्रकार जीव सतगुरु के शरण मे समर्थ साहेब पाता है। बिना पेड फल पानी पी नही सकता इसीप्रकार बिना सतगुरु शिष्य साहेब नही पाता है,इसलिए गुरु शिष्य के लिए धन्य है । ।।२२।।

तन मन अरपे धन || बोले मीठी मुख बाणी ||
सत्तगुरू सूं आधीन || करे मेहेमा बोहो आणि ||
प्रेम सो पिलंग ढुळाय || प्रित की सोड बिछावे ||
चित सो चँवर कराय || भाव प्रसादी लावे ||
*** जन सुखिया सिष साच सूं || अष्ट ऊभै अंग मांय ||**
तन मन दिल को साच ले || सीस निवाजे जाय ।।२३।।

इसलिए आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी शिष्यो को समजाते है कि,गुरु को

तन,मन तथा धन अर्पण करना चाहिए याने तन,मन,धन से निजमन निकालकर सतगुरु को अर्पण करना चाहिए । गुरु से मिठी बाणी बोलना चाहिए । सतगुरु से आधीन रहना चाहिए । गुरु की अनेको विधी से महिमा करनी चाहिए । जैसे घर पे कोई राजा के समान बडा मनुष्य आता है तो उसके लिए पलंग बिछाते । पलंग के उपर गादी बिछाते । गादी पे उन्हें बैठाते और सुहावनी हवा के लिए चंवर डुलाते और स्वादिष्ट भोजन प्रसादी करते इसीप्रकार गुरु के लिए प्रेम का पलंग बिछाना चाहिए याने गुरु से सदा प्रेम करना चाहिए,प्रित की गादी बिछानी चाहिए याने गुरु से सदा प्रिती करना चाहिए,चित्त का चंवर डुलाना चाहिए याने गुरु मे सदा चित्त रखना चाहिए तथा गुरु के लिए भाव का भोजन प्रसाद करना चाहिए याने गुरु का सदा भाव रखना चाहिए । इसप्रकार के सभी स्वभाव शिष्य ने गुरु के लिए रखना चाहिए । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी शिष्यों को समजाते है कि,इसप्रकार मोक्ष पाने के लिए गुरु पे विश्वास कर तन,मन,धन अर्पण कर गुरु के चरणो मे मस्तक नमाना चाहिए । ।।२३।।

सत्तगुर दर्शण जाय ।। और मन में नही लावे ।।
गुर देवे निज सरूप ।। रूप निरखत दिन जावे ।।
गुर बोले सो बेण ।। चित्त हिरदे धर दिजे ।।
और सकळ बिध त्याग ।। मान गुर बायक लिजे ।।
*** गुर गोविंद जन अेक हे ।। ता मे फेर न कोय ।।**
साचा सिष सुखरामजी ।। ज्यां गत अेसी होय ।।२४।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,सतगुरु के दर्शन करने जाते वक्त सतगुरु को गोविंद याने हर समजना चाहिए । गुरु को हर से छोटा समजने की बातें मन मे नही लाना चाहिए । गुरुदेव का निजरुप यह गोविंद रुप ही है ऐसा समजके उसे निरखते निरखते दिन व्यतीत करना चाहिए । गुरु जो बाणी बोलते है वह बाणी चित्त लगाकर हृदय में धारण करनी चाहिए और जगत की सभी मायावी बातें त्यागकर सिर्फ गुरु के वचन पे चलना चाहिए ऐसा शिष्य ने स्वभाव बनाना चाहिए । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,शिष्य को गुरु गोविंद तथा गुरु के बराबरी का संत एक ही समर्थाई का याने गोविंद ही दिखना चाहिए उसमे अंतर नही दिखना चाहिए । जिस शिष्य की गती गुरु गोविंद एक ही मानने की होती है वही शिष्य सच्चा है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी को कहते है । ।।२४।।

गुर बेचे बिक जाय ।। हरक मन माय बधावे ।।
आ बिध गाढी मूठ ।। कदे गोता नही खावे ।।
अेकन अंग रहाय ।। मत सो मुचे न कोई ।।
दिन दिन दुणी प्रीत ।। सरण सतगुर की सोई ।।

*** गुर पत मे सुखराजी ।। जे सिष साचा होय ।।**
देवळ इंडो चढ गयो ।। पत्त प्राक्रम जोय ।।२५।।

वही शिष्य सच्चा है जो गुरु यदी बेचते है तो बिक जाता है और उलटा उपर से मन मे हर्षित होता है । ऐसे शिष्य का गुरु मे गाढा विश्वास है यह समजना है । ऐसा शिष्य कभी आवागमन के चक्कर का गोता नही खाता । ऐसे शिष्य का स्वभाव गुरु के स्वभाव का बनता है,उसे उसका खुद का स्वभाव नही रहता है । ऐसे शिष्य का मत गुरु का मत रहता है । उसका गुरु मत कभी डोलायमान नही होता उलटा उसकी गुरु से दिन दिन प्रिती बढती है । ऐसा स्वभाव जिसका है वही सतगुरु के शरणा मे है ऐसा समजो,ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,जो शिष्य इसप्रकार से गुरु पत मे मजबूत है वही सच्चा शिष्य है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,वही शिष्य जैसे देवल के उपर चढा हुआ कलस रहता है वैसे गुरुरुपी देवल के उपर चढे हुए कलस समान रहता है। उस शिष्य मे यह पराक्रम गुरु ही गोविंद है यह विश्वास आने से आया है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।२५।।

।। साखी ।।

तीन लोक माया सही ।। चौथे लोक न जाय ।।
जीवाँ कारण साईयाँ ।। बफ धाऱ्यो जुग आँय ।।१।।

३ लोक १४ भवन मे माया का ही ज्ञान है । काल के देश मे रखने का ही ज्ञान है । आवागमन के चक्कर मे ही रखने का ज्ञान है । तीन लोक के परे के महासुख के चौथे लोक मे जाने का ज्ञान नही है । इसलिए महासुख के चौथे लोक मे ले जाने के लिए साई ने शरीर धारण किया है और संसार मे रहकर जीवों को चौथे लोक का ज्ञान देकर चौथे महासुख के लोक मे पहुँचाया है और पहुँचा रहे है ।।।१।।

अेसो ग्यान ऊचारीयो ।। निगम बेद गम नाय ।।
तीनू गेला छोड कर ।। ऊपराडे हंस जाय ।।२।।

साई ने संसार मे आकर निरगुण ज्ञान तथा वेदो के ज्ञान मे जो विधी नही है ऐसी निरगुण तथा सगुण के परे की वैराग्य विज्ञान ज्ञान की विधी जीवों के लिए प्रगट की है । यह विधी जो जीव धारण करता है वह जीव मृत्युलोक,स्वर्गलोक तथा पाताललोक मे जानेवाले सभी तिनो रास्ते को छोड्कर स्वर्ग के उपर के रास्ते से महासुख के चौथे लोक मे याने सतस्वरुप आनंदपद में जाता है । ।।२।।

ब्रम्हा बिसन महेस हे ।। सक्त धर्म प्रमाण ।।
जन सुखिया देखत रहे ।। हंस पहुँते निर्बाण ।।३।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,ब्रम्हा,विष्णू,महादेव,शक्ति,धर्मराज तथा

अन्य सभी देव मोक्ष मे याने चौथे महासुख के लोक मे जानेवाले हंस को देखते ही रहते और वह हंस इन सभी के सामने देखते ही देखते काल से मुक्त ऐसे महानिर्वाण पद मे पहुँचता है। ।३।

अेसा सतगुर सांईयाँ ।। अदभुत ग्यान सुणाय ।।
बेद कतेब न पावसी ।। थिर भये वाहाँ जाय ।।४।।

जो ज्ञान हिंदुओं के वेदो मे तथा मुसलमानो के कुराण में नही है ऐसा अद्भूत ज्ञान सतगुरु स्वामी संसार मे आकर जीवों को बताते है । ऐसा सतगुरु का ज्ञान सुनकर अनेक जीव वेदो की और कुराण की पहुँच नही है ऐसे चौथे महासुख के देश मे जाकर स्थिर होते है और वहाँ अनंत सुख लुटते है ।।।४।।

तीन लोक जावे नही ।। सुर नर धर पाताळ ।।
हंस पहूँच्या गिगन मे ।। पाप पुन्न नही काळ ।।५।।

ऐसा सतगुरु का ज्ञान पाए हुए हंस तीन लोक याने स्वर्गलोक,मृत्यूलोक तथा पाताललोक न जाते गगन मे चौथे लोक याने सतस्वरुप आनंदपद के लोक पहुँचते है । वहाँ त्रिगुणी माया नही है इसलिए वहाँ शुभ याने पुण्य और अशुभ याने पाप कर्म नही रहते । इसकारण वहाँ माया का सुख या काल का दु:ख नही रहता । वह लोक विज्ञान ज्ञान स्वरुप का है । वहाँ विज्ञान ज्ञान के अद्भूत अनंत तृप्त सुख रहते । वे सुख हंस वहाँ लेता है ।।।५।।

तीन ताप कूं मेट कर ।। सबका अमल उडाय ।।
जन सुखिया गुर देव जी ।। ब्रम्ह के मांही मिलाय ।।६।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,गुरुदेवजी हंस के आधी याने मन के दु:ख,व्याधी याने तन के दु:ख,उपाधी याने हंस का कोई संबंध नही ऐसे प्रालब्ध के परे के आ आके पड्नेवाले दु:ख मिटा देते है याने इन आधी,व्याधी,उपाधी तीनो का अधिकार सदा के लिए मिटा देते है और गुरुदेवजी हंस को महासुख के सतस्वरुप ब्रम्ह में सदा के लिए मिला देते है । ।।६।।

।। इति गुरू महिमा सम्पूर्ण ।।